

# ARJUN BATCH

## CLASS 10th | GEOGRAPHY

# जल संसाधन

## WATER RESOURCES

अध्याय-3 | भाग-1



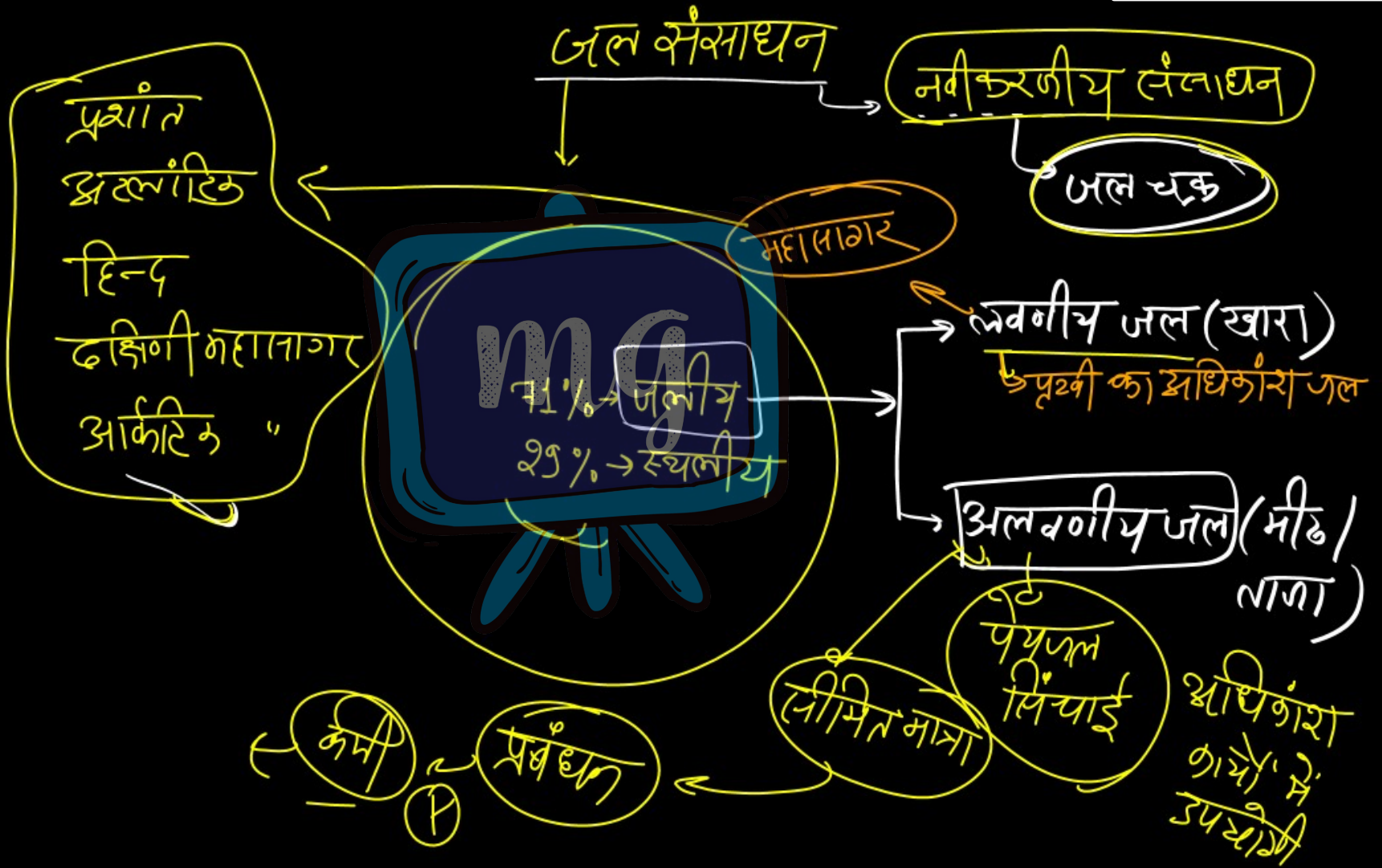
# आज क्या पढ़ेंगे ?

1 जल संसाधन

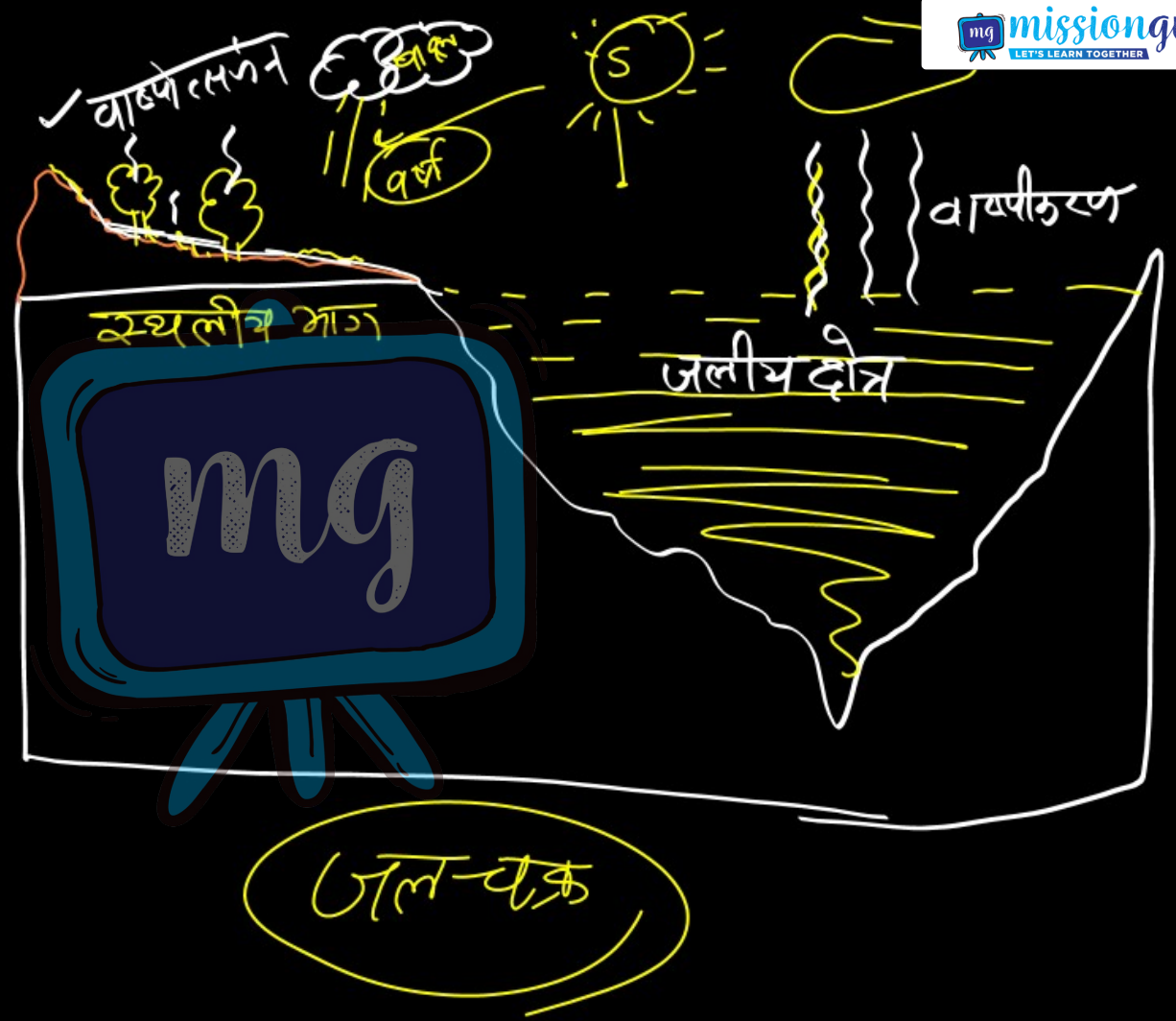
2 जल दुर्लभता और संरक्षण

3 जल जीवन मिशन

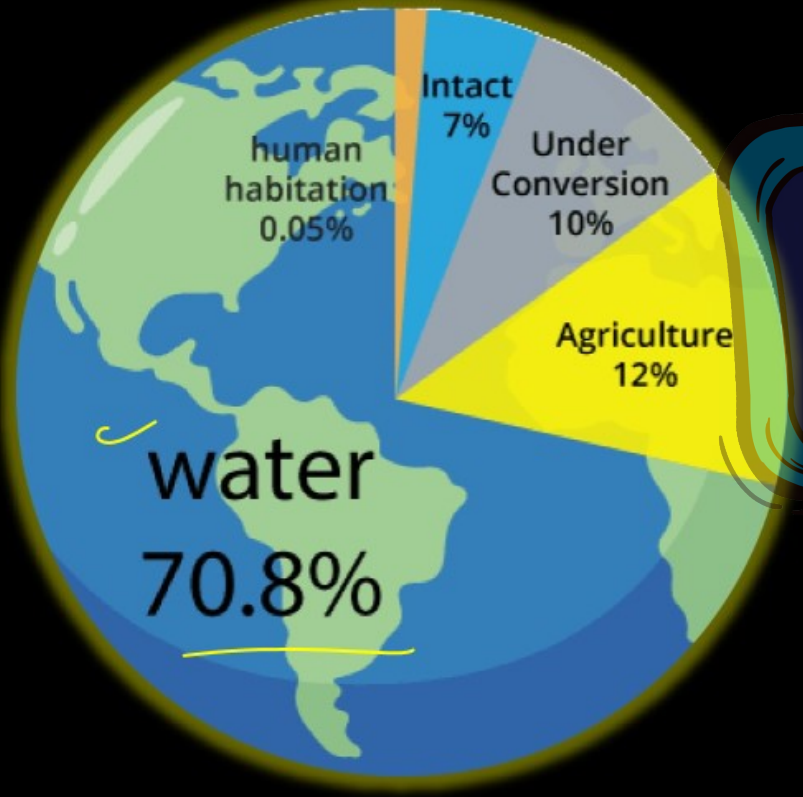
4 अटल भूजल योजना



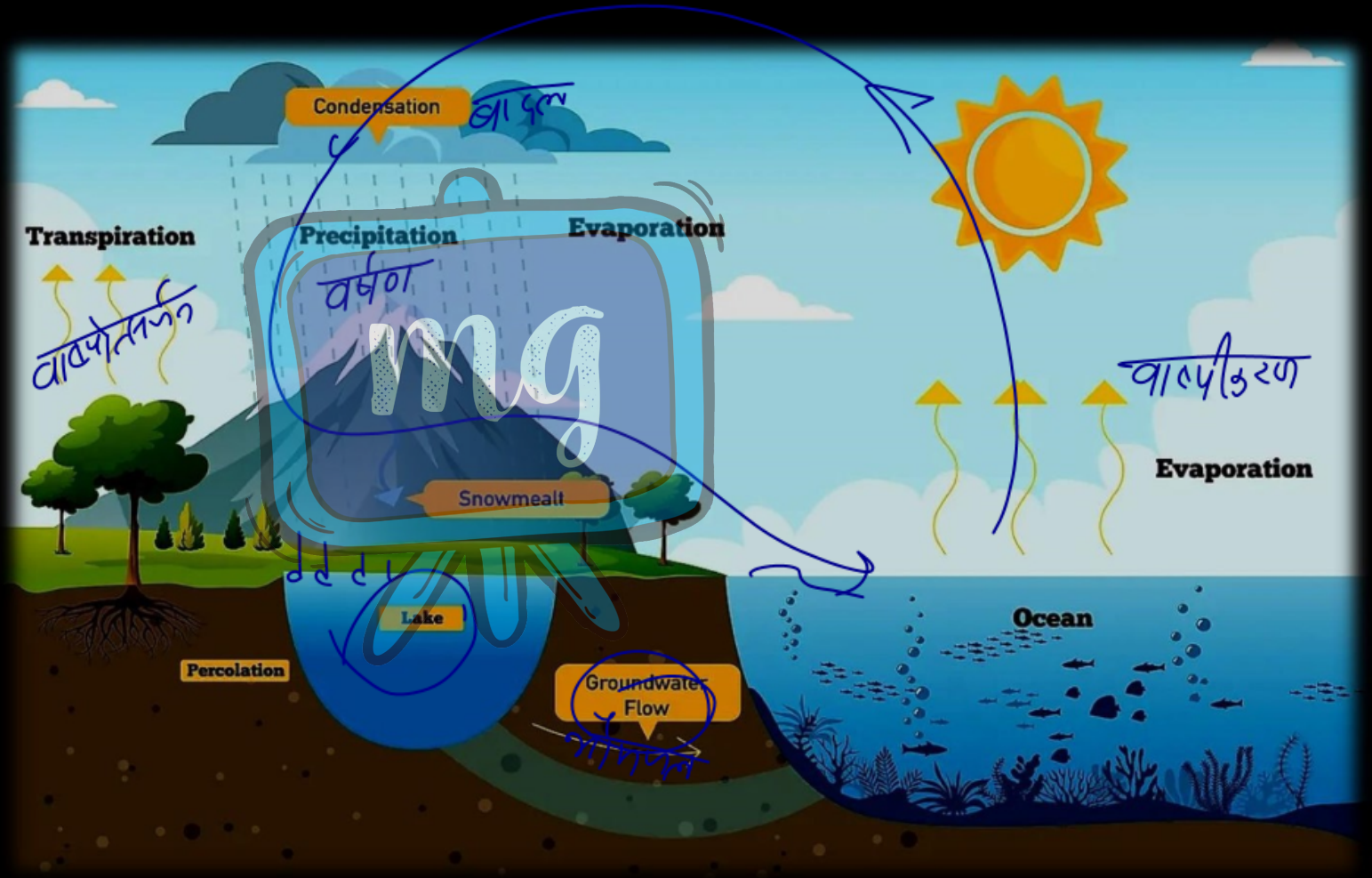
अधिकार क्षेत्रों में उपचार

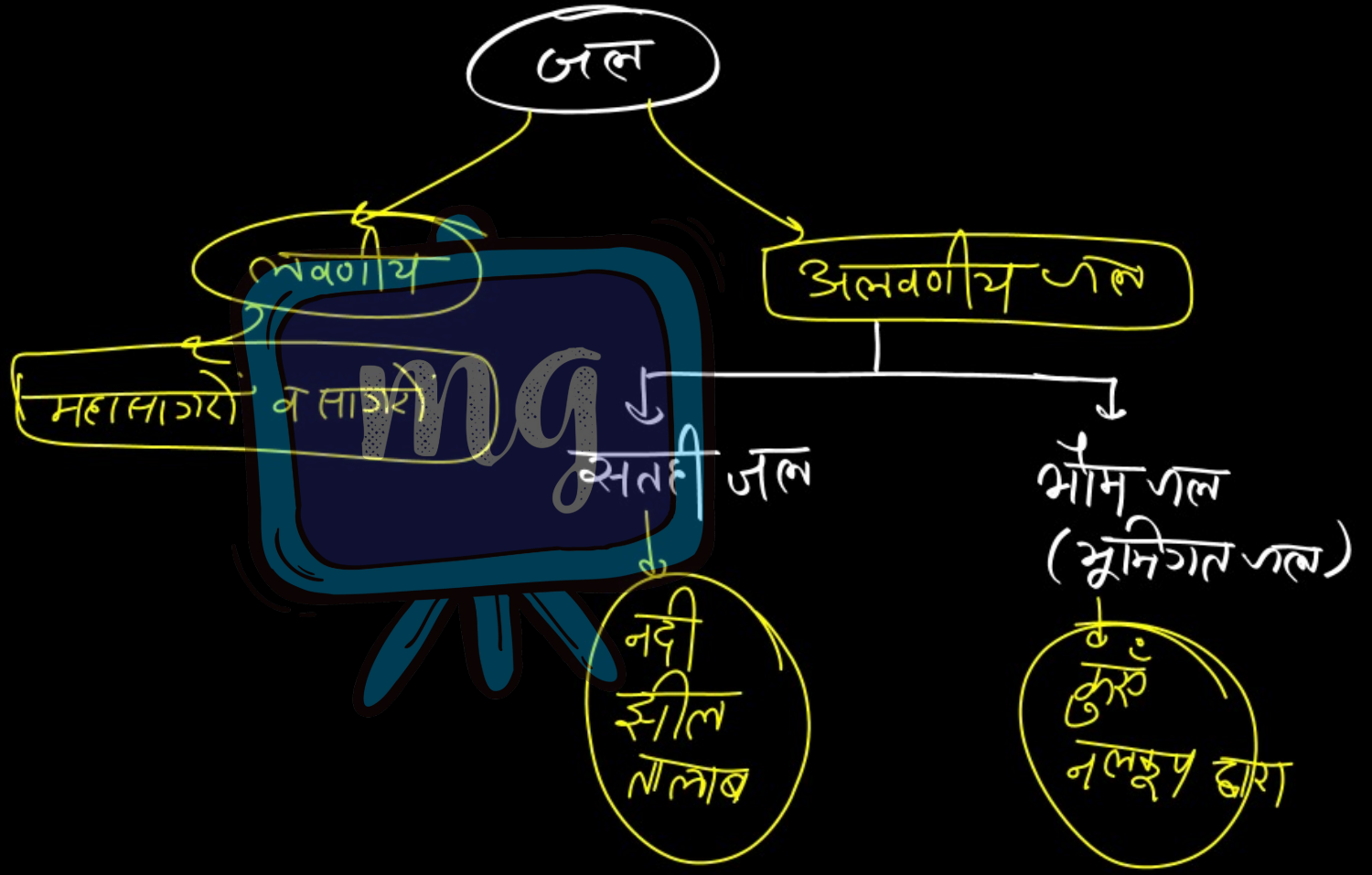


## जल संसाधन



- **तीन-चौथाई** धरातल जल से ढका हुआ है, परंतु प्रयोग में लाने योग्य **अलवणीय-जल** का अनुपात बहुत कम है। (71%, 29%) **ग्रीठ**
- अलवणीय-जल हमें **सतही-अपवाह** और **भौमजल** **स्रोत** से प्राप्त होता है, जिनका लगातार नवीकरण और पुनर्भरण **जलीय चक्र** द्वारा होता रहता है।
- सारा जल **जलीय-चक्र** में गतिशील रहता है जिससे जल **नवीकरण** सुनिश्चित होता है।

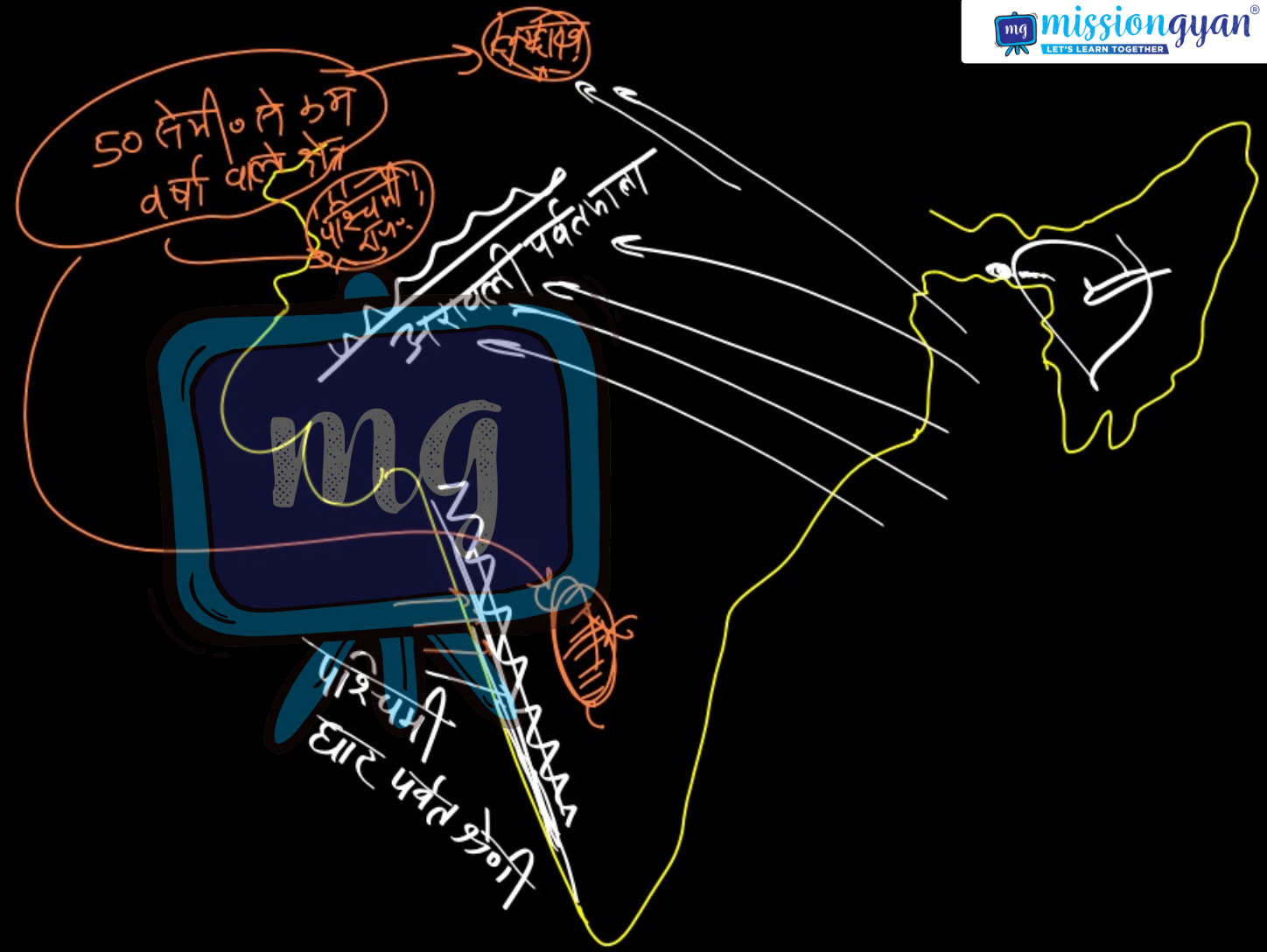


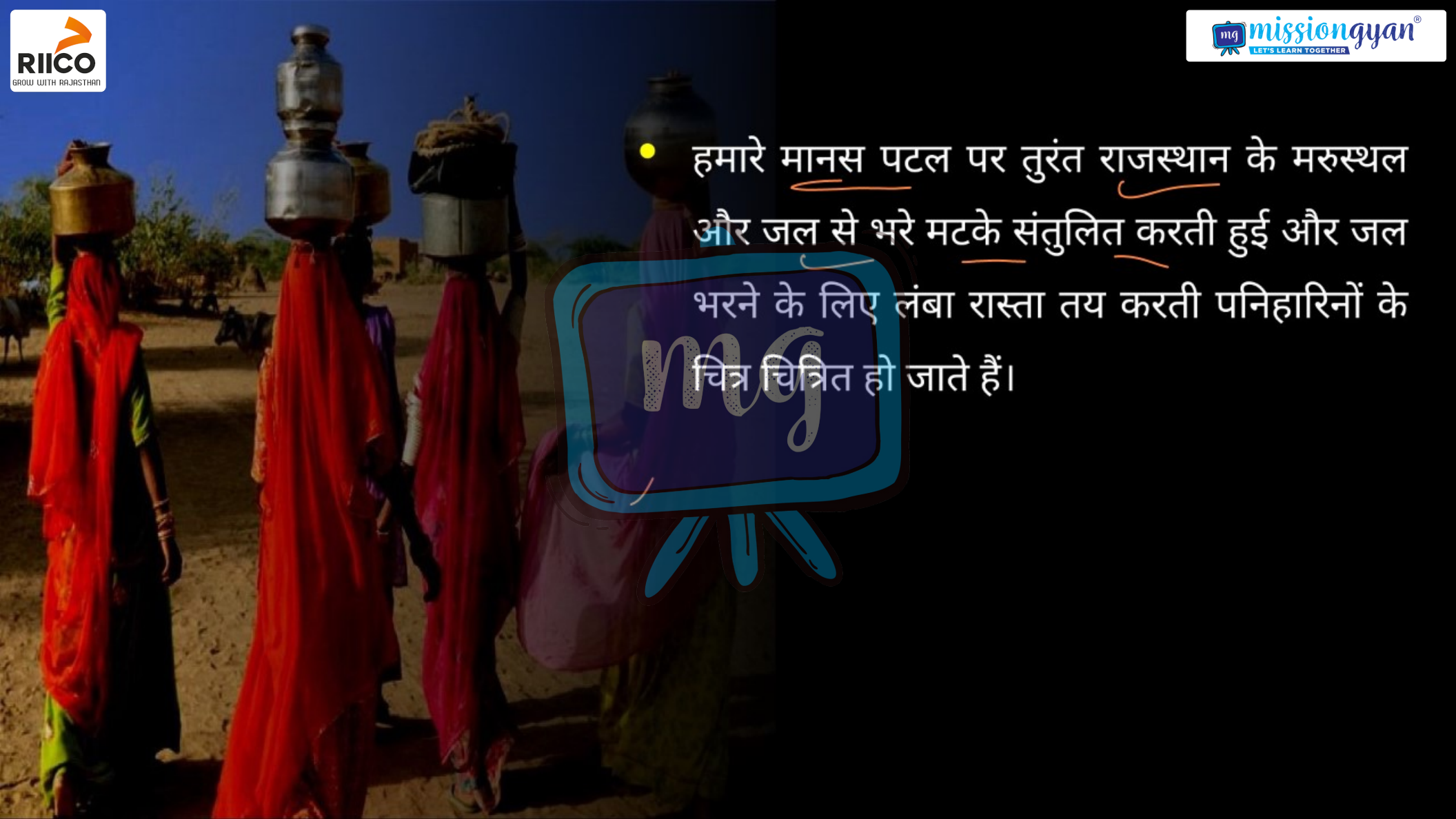




## जल दुर्लभता और जल संरक्षण-प्रबंधन की आवश्यकता

- जल के विशाल भंडार और इसके नवीकरण होते हुए भी हमें जल दुर्लभता का सामना करना पड़ सकता है।
- जैसे ही हम जल की कमी की बात करते हैं तो हमें तत्काल ही कम वर्षा वाले क्षेत्रों या सूखाग्रस्त इलाकों का ध्यान आता है।





- हमारे मानस पटल पर तुरंत राजस्थान के मरुस्थल और जल से भरे मटके संतुलित करती हुई और जल भरने के लिए लंबा रास्ता तय करती पनिहारिनों के चित्र चित्रित हो जाते हैं।



## जल की कमी/ जल दुर्लभता के प्रमुख कारण —

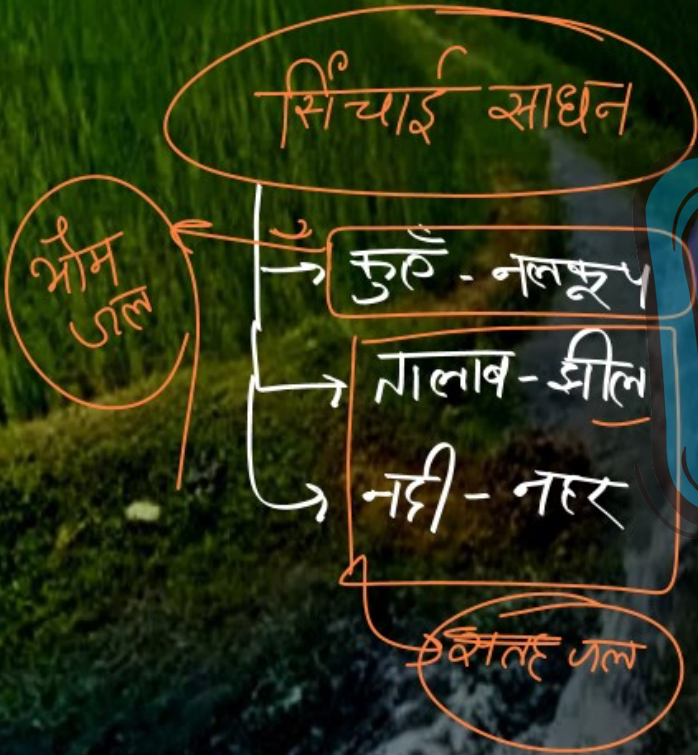
- अतिशोषण और अत्यधिक प्रयोग
- समाज के विभिन्न वर्गों में जल का असमान वितरण
- अत्यधिक जनसंख्या / बढ़ती जनसंख्या → जल की बढ़ती माँग
- असमान वितरण (वर्षा में वार्षिक और मौसमी परिवर्तन के कारण )
- जल की खराब गुणवत्ता
- शहरों में जल संसाधनों का अति शोषण

गंगा नदी

गंगोत्री हिमनद

वर्षा जल

• जल का सबसे ज्यादा उपयोग सिंचित कृषि में होता है।



### क्यों ?

- अधिक जनसंख्या → अधिक अनाज उगाना → अधिक जल
- अनाज का उत्पादन बढ़ाने के लिए जल संसाधनों का अतिशोषण करके सिंचित क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है और शुष्क ऋतु में भी खेती की जा सकती है।

- बहुत से किसानों के खेतों पर अपने निजी कुएँ और नलकूप हैं

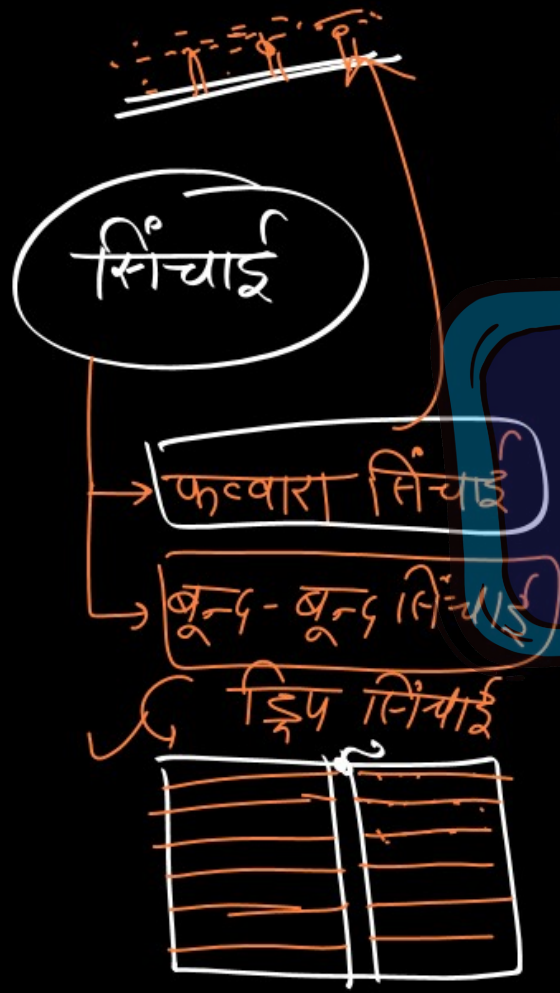
- जिनसे सिंचाई करके वे उत्पादन बढ़ा रहे हैं।

**प्रभाव —**

- इसके कारण भूमि जलस्तर नीचे गिर सकता है

- लोगों के लिए जल की उपलब्धता में कमी हो सकती है।

- भोजन सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

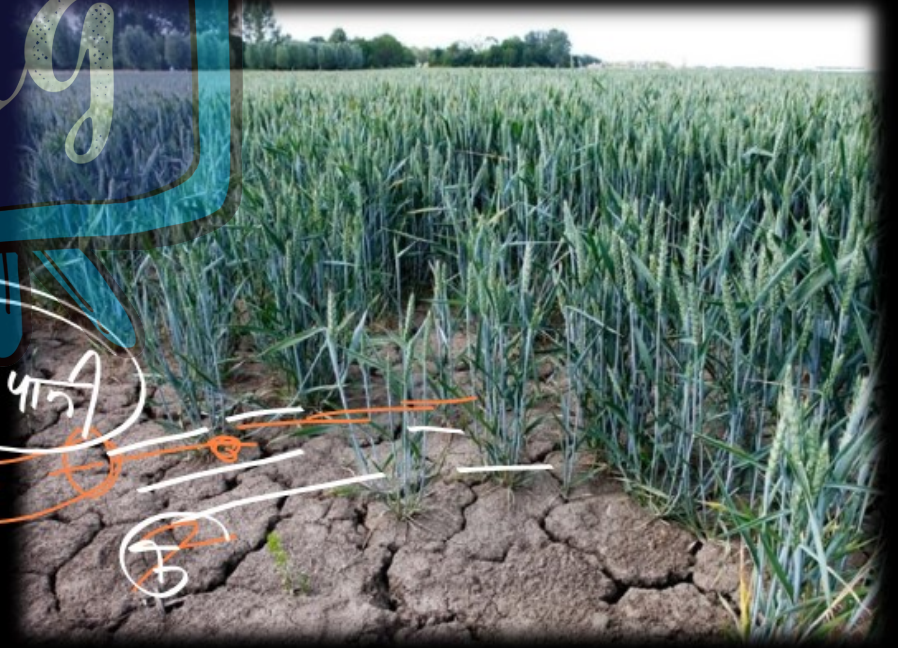


हल — (समाधान)

- शुष्क-कृषि तकनीकों का विकास।
- सूखा-प्रतिरोधी फसलों का विकास।



खुला पानी



- स्वतंत्रता के बाद भारत में तेजी से औद्योगीकरण और शहरीकरण हुआ।
- उद्योगों की बढ़ती हुई संख्या → अलवणीय जल (मीठा) संसाधनों पर दबाव।
- उद्योगों को ऊर्जा की भी आवश्यकता होती है और इसकी काफी हद तक पूर्ति जल विद्युत से होती है।
- (वर्तमान में भारत में कुल विद्युत का लगभग 22% भाग जल विद्युत से प्राप्त होता है)।

५

- शहरों की बढ़ती संख्या, बढ़ती जनसंख्या तथा शहरी जीवन शैली के कारण जल एवं ऊर्जा की आवश्यकता में बढ़ोतरी हुई है जिससे समस्याएँ और भी गहरी हुई हैं।



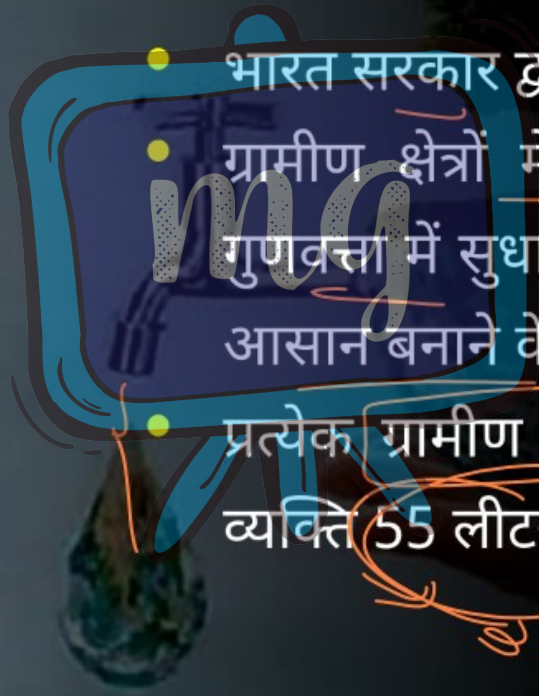
## जल प्रदूषण —

- घरेलू अपशिष्ट।
- औद्योगिक अपशिष्ट।
- कृषि में प्रयुक्त उर्वरक एवं कीटनाशक।
- अन्य रसायन।



# जल जीवन मिशन (J.J.M.)

# जल जीवन मिशन



- भारत सरकार द्वारा।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और उनके जीवनयापन को आसान बनाने के लिए।
- प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नियमित रूप से प्रति व्यक्ति 55 लीटर पीने-योग्य पानी की आपूर्ति।

हर

## अटल भूजल योजना

1. योजना का क्षेत्र — गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश
2. प्रशासनिक कवरेज — 80 जिलों के 229 प्रशासनिक ब्लॉक/तालुका 8220 जल की कमी वाले ग्राम पंचायतों में कार्यान्वयन

3. जल की स्थिति — चयनित राज्यों में जल की कमी  
अति-दोहित, गंभीर, अर्ध-गंभीर ब्लॉकों की संख्या

लगभग 37%

4. प्रमुख उद्देश्य — जल संरक्षण और विवेकपूर्ण जल  
प्रबंधन को बढ़ावा देना जल उपयोग के तरीकों में  
सुधार लाना जनसामान्य के व्यवहार में परिवर्तन  
लाना